International Journal of Academic Research
ISSN: 2348-7666; Vol.7, Issue-9(1), September, 2020
Impact Factor: 6.023; Email: drtvramana@yahoo.co.in

Importance of literature and culture in the age of Globalization

वैश्वीकरण के युग में साहित्य और संस्कृति के अध्ययन की आवश्यकता - एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

- श्रीमति उमे सल्मा
असोसिऐट प्रोफेसर, अध्यक्षा-हिंदी विभाग,
संत थेरिस्सा महिला महा विद्यालय,
एलूरु, जिलाः पश्चिम गोदावरि, आंध्रप्रदेश

आधुनिक वैज्ञानिक युग की समस्या नामक निबन्ध में महादेवी वर्मा कहती हैं कि "आज के वैज्ञानिक युग की सबसे बडी समस्या निकट की दूरी है"। आज के वैश्वीकरण के युग में "ग्लोबल विलेज" की आवधारण हमारे सामने आई है। विज्ञान प्रादूयोगिकी और सूचनाकान्ति के माध्यम से विशाल विश्व भौतिक धरतल पर श्लोबल विलेज तो बनगया लेकिन गाँव की आत्मीयता गाँव का मन नष्ट हो गया। आज हम भौतिक धरातल पर एक दूसरे के जितने निकट है मानसिक रुप से उतने ही दूर हैं। यही आज के सभ्यता का सब से बडा संकट है। यह सतकालिन सब्यता कामायबी के सारस्वत नगर की सभ्यता की तरह श्रदूधा विहीन सभ्यता है। श्रदूधा मनुष्य के हृदय पक्ष के लिये प्रतीक है।मनुष्य की बौद्धिक क्षमताओं द्वारा विकसित विज्ञान का एकांगी विकास ही आज की सभ्यता के संकट का मूल कारण है। निर्मल वर्मा "अतीत एक आत्मंथन" नामक निबन्ध में कहते है - संकट की घडी आत्म मंथन की घडी है और सही आत्ममंथन हमेशा अतीत में लिये गये फैसलों के आसपास है। अतः हमे अब यह देखना चाहिये कि अपने अतीत में मनुष्य ने ऐसा कौनसा निर्णय लिया जि के संकटमय परिणाम आज हमें भुगतना पज रहा है। इस समस्या की जडों को अगर हम खोजेंगे तो पता जलेगा कि साहित्य और संस्कृतियों के अस्तित्व के संकट की जडें भी आधुनिक सभ्यता के साथ जुडी हुई है।

हम जानते है कि साहित्य का अस्तित्व संकट में पडगया है। विज्ञान और प्रादूयौकिकी के समक्ष साहित्य, संस्कृति, इतिहास और अन्य समाज शास्त्रीय विषयों के अध्यायन और अध्यापन करने वाले छात्र और अध्यापक दोयम कोटि के बनगये है। आज पश्चिमी सभ्यता के मूल में उपयोगितावादी दृष्टकोण है। ज्ञानार्जन और मानवीय संबंन्ध जैसे उदात्त विषय उपयोगिक्ता के तराजू में तोले जा रहे है। उपयोगिता वादी प्रवुत्ति से प्रेरित होकर जब सारी दुनिया पश्चिमी सभ्यता का अनुकरण कर रही है। ऐसे में अमेरिका के एक विश्वस्तरीय चिंतन - विरोषज्ञ एडवर्ड-डि-बोनो कहते है - "पिछली शताब्दि सफल नहीं रही। विज्ञान और प्रादूयौगिक के क्षेत्र में बृहत्तर विकास के बानजूद हम कुछ श्रेष्ठतम चिंतन पद्दतियों से वंचित रह गये"। पश्चिम की शिक्षा पद्दति जिस का अनुकरण आज हम कर रहे हैं उस की तृटियों की और संकेत करते हुए कहते है - हम अपने बच्चों की क्षमताओं की ओर ध्यान दिये बिना ही सभी को दौडने के लिए

मजबूर करते है। जो दौड सकते है वे तो आगे निकल जाते है और जो दौड नहीं सकते उनके माथे पर असफलता का लेबिल चिपकाया जाता है। एडवर्ड-डि-बोनो कहते है कि यहाँ पर उल्टी बात हो रही है। क्यों कि हमें पहले बच्चों को चलाना सिखाना चाहिये, फिर उनकी क्षमता के आधार पर उन्हें दौडने का प्रशिक्षण देना चाहिये। उल्टी शिक्षा प्रणाली के कारण हमारे बच्चे हीनता-ग्रन्थि के शिकार हो रहे है। अपने माता-पिता की महत्वाकाक्षाओं और स्पर्थापूर्ण वातावरण में अपने को फिट नही करपाने के कारण मानसिक संतुलन स्वोकर आत्माहत्य करने पर तुले जा रहें है। इस बीच रेसिडेन्शियल कालेजों में पढने वाले छात्रों में बढती आत्माहत्याओं की संख्या इस का उदाहरण है। भारत मे ही अगर यह स्थिति है जहाँ पर परिवार रुपी संख्या की जडे सुदृढ है तो विदेशों में निरन्तर बढती जानेवाली आत्माहत्याओं की संख्या से विचलित होकर ही "न्योरोबैचालजी" के क्षेत्र में मनुष्य के मस्तिष्क पर अनुसंधान किया होगा। हाल ही में अर्थात पिछली शताब्दि के अस्सी के दशक में किये गये अनुसंधान से यह साबित हुआ कि मनुष्य के मस्तिष्क में बुधि के दो स्तर दोते है - एक विचाराराल्क बुधि या मेधास्तर और दूसरी भावतमक बुद्दि या इमोशनल इंटेसिजेन्स। इस विषय पर अनुसंधान करनेवाले दो वैज्ञानिक है - येल विश्वविद्यालय के पीटर सालोवी और न्यूहेंपशैर के जॉन मेयर। इन दोनो वैज्ञानिको द्वारा आविष्कृत इमोशनल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल करते हुए न्यूयार्क टाइम्स के गोलमेन ने एक पुस्तक लिखी जिस का नाम था "इमोशनल इंटेलिजेन्स वै इट मेटसे मोर देन आई क्यू।" (Emotional intelligence why it matters more than I.Q) गोल मेन के अनुसार मनुष्य के जीवन की सफलता 20% ही उस के मेधास्तर पर आधारित रहती है, और 80% सफलता भावात्मक बुधि पर आधारित है। जिस मेधा-स्तर या I.Q को हम जीनियस होने के प्रमाण के रुप में मानते हैं उस का विकास किशोखवस्था तक ही होता है। और जिस को हम भावत्मक बुधि या इमोशनल इंटेलिजेन्स कहते हैं उस का विकास आखरी साँस तक होता ही रेहता है। शिक्षा के क्षेत्र में आज तक यह माना जाता रहा है कि जिन छात्रों का I.Q मेधा-स्तर अधिक है उनकों सक्षम माना जाता रहा है, यह भी माना जाता है कि जिस का I.Q अधिक है वे ही आज के परिवेश मे सफल हो सकते है। लेकिन मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि नौकरी पाने के लिये भला ही I.Q उपयोगी सिध हो लेकिन नौकरी में टिके रहने के लिये I.Q के साथ साथ E.Q की भी आवश्यकता होती है। इस भावत्मक बुधि की आवश्यक्ता से अनभिग्न होने के कारण बंगला गाडी और डालर के ड्रीम से हम अपने वैचारिक बुधि को विकसित करने लग गये और भावत्मक बुधि की उपेक्षा करने लग गये है। कशाधात प्रेरित इस समाज में माता पिता और अध्यापक होने के नाते हमें इस मोड एक क्षण के लिये रुक कर यह सोंचने की आवश्यकता है कि - हमें मनुश्य के मस्तिष्क के मंतुलन को बिगाडने का अधिकार क्या ह? मशीन को भी कृत्रिम-मेधा को प्रदत्त करने का प्रयत्न किये जाने वाले इस युग में हम

मनुष्य की मनुष्यता को कैसे बचाकर रखेंगे? मानवीय संवेथनाओं का स्रोत भावत्मक बुधि की उपेक्षक कर हम भविश्य के लिये कैसी नसल तयार कर रहे है। क्यों हम सब जानते है कि मनुष्य के शरीर में जिस अंग का उपयोग नहीं होगा वह धीरे धीरे क्षीण होकर नष्ट होजायेगा। मनुष्य की स्वार्थ लोलुपता ने प्रकृति के संतुलन को बिगाड रखा है। सृष्टि की सर्वश्रेष्ठ कृति मानव की भी क्या यही नियति है? एक असंतुलित विक्षिप्त मानव ही भविश्य को हमारी भेटं है?

भावात्मक बुधि के पोषण की और विचारात्मक बुधि के साथ उस के सामंजस्य की आवश्यकता पर बल देने के पशचात अब यह प्रशन उठाता है कि वैश्वीकरण के युग में जब सभी लोग सकलता की सढी के रुप मे अपने मेधास्तर को बढाने की कोशिष मे लग गये है तो इस युग में भावनात्मक बुधि की क्या आवश्यकता है? इस की आवश्यकता पर बल देने से पहले यह समझना आवश्यक बन जाता है की आखिर यह भावत्मक बुधि क्या है? भावत्मक बुधि मनुष्य की वह क्षमता है जो कि मन और मस्तिष्क को संतुलित रख सकती है। अंग्रेजी में इस की परिभाषा इस प्रकार दी गई है।

"Emotional intelligence can be defined as emotional awareness and emotional management skills which enables a person to balance emotion and reason so as to maximise ones own long term happiness"

तो आगे हम यह देखेंगे कि वैश्वीकरण के युग में साहित्य और संस्कृतियों की क्या भूमिका है उस के अध्ययन की क्या आवश्यकता है? प्रमुख समीक्षक आचार्य रामूर्ती त्रिपाठी का कहना है कि "रागपूर्ण पर दुख कातरता ही मनुष्यता की पहचान है। इस भावात्मक सत्ता का विस्तार केवल साहित्य ही कर सकता है"। विज्ञान के एकांगी विकास के इस युग में साहित्य के अध्यायन के माध्यम से अपनी भावत्मकता को सींचना अत्यंत आवश्यक है। आज के वैश्वीकरण के युग में भारतीय शिक्षित मध्यवर्ग का एक मात्र लक्ष्य बन गया है कि वह अंतराष्टीय समुदाय का सदस्य बन जाय। इस लक्ष्य प्राप्ति का माध्यम बहुराष्ट्रीय कंपनियों की नौकरी है। इन बहु राष्ट्री कंपनियों में प्रवेश करने के लिये लोग अपनी वैचारिक बुद्दि I.Q को बढाने में लग जाते है लेकिन आर्गनैसेशनल बिहेवियर के विशेषज्ञों का कहना है कि I.Q के बल पर व्यक्ति इन संस्थाओ मे प्रवेश तो पा सकता है लेकिन उस में टिके रहने के लिए और सफलता प्राप्त करने के लिए भावात्मक बुधि की आवश्यक्ता है। आज इन बहु राष्ट्रीय कंपनियों की सब से बडी चुनौती है कर्मचारी वर्ग का वैविध्य। (Work force diversity) इन संस्थाओं में विभिन्न जातियों, देशों और संस्कृतियों के लोग काम करते हैं। ऐसे में प्रबन्धक स्तर के व्यक्ति को इन सब के बीच समन्वय स्थापित करने की आवश्यकता होती है। हनीवेल नामक एक बहुराष्ट्रीय कंपनी मे 29 भाषाऐं बोल ने वाले लोग, 47 संस्कृतियों प्रतिनिधि और 90 जनजातियों के लोग काम करते

है। ऐसे वैविध्य पूर्ण परिवेश में समन्वय के बिना सफलता प्राप्त नही हो सकती। समन्वय भावत्मक सत्ता से ही संभव है और उस का पोषण साहित्य ही कर सकता है। संस्कृतियो का ज्ञान और आदर पूर्ण दिुष्टिकोण भी बहुत आवश्यक बन जाता है। अपने देश की संस्कृति के ज्ञान के साथ साथ अन्य देशों की संस्कृतियो का ज्ञान व्यक्ति को आत्म सम्मान देने के सात सा दूसरों का सम्मान करना बी सिखाता है। सभ्यता कोई भी हो संस्कृति कोई बी हो निरन्तर प्रवाहमान मानव जाति मानवीयता की मांग करती और मानवीयता का पोष्ण भावत्मक सत्ता को नकार कर नहीं किया जा सकता। अतः हम कह सकते हैं कि वैश्वीकरण के युग मे साहित्य और संस्कृति के अध्ययन की अवश्यकता पहले से भी अधिक है।

References :

1. डा.दलीप सिंह - कार्यस्थल पर भावनात्मक बुद्दिमत्ता
   प्रकाशकः डायमंड पॉकेट बुक्स- 2010

2. संपादक मंडलः
   १) राजेश अग्रवाल
   २) डॉ.डी.विध्याधर
   ३) डॉ.सुषमा देवी
   ४) डॉ.डी.जयप्रदा
   हिन्दी भाषा, साहित्य एवं भारतीय संस्कृतिः वैश्विक परिदृश्य
   मिलिंद प्रकाशन-हैदराबाद-2019

3. जयशंकर प्रसाद ग्रंथावली खण्ड-4
   लोकभारती प्रकाशन, संपादक-सत्यप्रकाश मिश्र।

4. **Daniel Goldman** - Emotional intelligence why it can matter more than I.Q
   Bantom Books - 1995

5. **Edward De Bono** - New thinking for ne millenium
   Penquin Books - 1999